बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर, बिहार

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा

बुलेटिन संख्या- 65/2026 **दिनांक-21 अगस्त, 2026**

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(22-26 अगस्त, 2026)

बिहार कृषि विश्वविद्यालय ग्रामीण कृषि मौसम सेवा एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः

भारत मौसम विज्ञान विभाग के पूर्वानुमान के अनुसार, पूर्वानुमान अवधि 22-26 अगस्त के दौरान, दक्षिण बिहार के जिलों में आसमान में घने बादल छाए रह सकते हैं एवं एक- दो स्थानों पर गरज-चमक के साथ तेज हवा चलने एवं हल्की वर्षा होने का अनुमान है। हालाँकि बक्सर, रोहतास , कैमूर, जिलों नालंदा, लखीसराय में एक- दो स्थानों पर भारी वर्षा भी हो सकती है। अधिकतम तापमान 33-34 डिग्री सेंटीग्रेड और न्यूनतम तापमान 28-29 डिग्री सेंटीग्रेड रहने की संभावना है। सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80-85 प्रतिशत तथा दोपहर में 60-70 प्रतिशत रहने की संभावना है। पूर्वानुमान अवधि में 10-15 किमी/घंटा की गति से पूरबा हवा चलने का अनुमान है।

फसल	समसामयिक सुझाव
धान	कम वर्षा की स्थिति में खरपतवार की वृद्धि बढ़ जाती है। समय पर निराई-गुड़ाई करें तथा इसके बाद 20-30 किग्रा नाइट्रोजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेशन करें। अथवा बिस्पायरिबेक सोडियम 200 ग्राम/प्रति हेक्टेयर एवं पायरेजोसल्फ्यूरॉन 200 ग्राम/प्रति हेक्टेयर का मिश्रण खेत में हल्की नमी रहने पर स्प्रे करें एवं तत्पश्चात नाइट्रोजन का उपरिवेशन करें।
खरीफ मक्का	तना छेदक के प्रकोप की नियमित निगरानी करें। प्रभावित पौधों की मध्य कलिका सूखकर मुरझा जाती है और खींचने पर आसानी से निकल आती है। ऐसे लक्षण दिखाई देने पर कार्बोफ्यूरान 3 जी /7 किग्रा प्रति हेक्टेयर की दर से गाभा में प्रयोग करें।
अरहर	अरहर में आवश्यकतानुसार गैप फिलिंग, छँटाई तथा निकाई.गुड़ाई करते रहना चाहिए। सितम्बर वाली अरहर के लिए खेत की तैयारी कर लेनी चाहिए।
सब्जियाँ	फूलगोभी की पूसा हिम ज्योति, डी-96 एवं पंत शुभ्रा जैसी मध्य अवधि वाली किस्मों की बुआई करें। 350-400 ग्राम बीज तथा 20-25 टन गोबर की खाद प्रति हेक्टेयर दें। साथ ही 120 किग्रा नाइट्रोजन, 60-80 किग्रा फास्फोरस, 40-60 किग्रा पोटाश, 10-15 किग्रा बोरेक्स एवं 1-2 किग्रा अमोनियम मोलिब्डेट प्रति हेक्टेयर प्रयोग करें। कद्दूवर्गीय सब्जियाँ: फल मक्खी की नियमित निगरानी करें तथा नियंत्रण हेतु मिथाइल यूजेनॉल ट्रैप का प्रयोग करें। प्रकोप होने पर साफ मौसम में इमिडाक्लोप्रिड 30.5 एस.सी./0.25 मि.ली. प्रति लीटर पानी का छिड़काव करें। जल जमाव से बचाव हेतु लताओं को बाँस की मचान (ट्रेलिस) पर चढ़ाकर भूमि से ऊपर रखें। मिर्च की उठी हुई क्यारियों पर बुआई करें। मुक्त परागित किस्में: अर्का लोहित, पूसा ज्वाला, पूसा सदाबहार, काशी अनमोल, काशी गौरव, पंत सी-1 एवं पंजाब लाल। संकर किस्में: अर्का श्वेता, कोंकण कीर्ति , अर्का मेघना, अर्का हरिता, काशी सुर्ख , काशी अगेती एवं काशी तेज। बीज दर: मुक्त परागित किस्मों के लिए 800-1000 ग्राम/हेक्टेयर, संकर किस्मों के लिए 250-300 ग्राम/हेक्टेयर । बुआई से पूर्व बीजों को उपचारित करें। रोपाई 50×45 सेमी की दूरी पर करें तथा 25-30 टन गोबर की सड़ी खाद, 100-120 किग्रा नाइट्रोजन, 40-50 किग्रा फॉस्फोरस एवं 40-50 किग्रा पोटाश प्रति हेक्टेयर का प्रयोग करें।
बागवानी	पपीते की बीज बुआई के लिए मौसम अनुकूल है। अगस्त के मध्य से बीज बुआई शुरू करें। एक हेक्टेयर क्षेत्र के लिए 300-350 ग्राम बीज की आवश्यकता होती है। बीजों को बाविस्टिन 2 ग्राम/ किग्रा बीज की दर से उपचारित कर 150 गेज पॉलीथिन की 20×15 सेमी आकार की थैलियों में बोयें। पौधशाला में 7-10 सेमी की दूरी पर 10-15 सेमी ऊँची क्यारियों में बीज बोयें। 20-25 सेमी ऊँचाई होने पर पौधों को रोपाई के लिए तैयार करें। पूसा ड्वार्फ , पूसा नन्हा, पूसा डेलीसियस, सी.ओ.-7, अर्का सूर्या एवं रेड लेडी अनुसंशित किस्में हैं।
पशुपालन	पशुओं में PPR, FMD (खुरपका-मुंहपका) एवं HS (गलघोंटू) रोगों का खतरा अधिक है, अतःपशुओं का समय पर टीकाकरण कराएं, उन्हें स्वच्छ एवं सूखा रखें तथा बीमार पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखें। रोग के लक्षण दिखाई देने पर तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करें और पशुओं की अनावश्यक आवाजाही पर नियंत्रण रखें। गलाघोटू एवं लंगड़ी रोग से बचाव के लिए इस माह में अवश्य लगवा दें । पशुओं को संतुलित एवं पौष्टिक आहार दें। लम्पी रोग से बचाव हेतु पशुओं के बाड़े को साफ एवं सूखा रखें तथा प्रतिदिन सफाई के बाद चूने के पाउडर का छिड़काव करें।